

पेरिस में पच्चीस साल बीत गये थे। चित्रकला को समझने के लिये, चित्र बनाने में बहुत समय लगा। कुछ सफलता भी मिली, पर मैं सन्तुष्ट न था। चित्रों में कुछ कमी लगती थी। हाँ, रेखाओं को, रंगों को, रूप को उभरते देखा, इनका महत्व ठीक से समझा, पर लगा कि देश की महान सांस्कृतिक को, विदेश में, भूल रहा था। वैसे तो, मैंने देश से सदैव गहरा सम्बन्ध बनाए रखा था, अपनी भाषा नहीं भूला, पर लगा कि अब फिर से देखने, सोचने, समझने की ज़रूरत है। भाग्यवश, उसी समय देश का निमंत्रण मिला, 1908 में। यह था पत्र-अशोक वाजपेयी जी का, जो उस समय मध्य प्रदेश कला परिषद् के प्रमुख थे और भोपाल में, मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के सचिव थे। मानिये, मुझे हार्दिक खुशी हुई। मेरे लिये यह देव कृपा ही थी। उन्होंने मुझे बुलाया-भोपाल-चित्रों के साथ-"उत्सव"-मिलन, जागृति, सुख, आनन्द के लिये मध्यप्रदेश में ही- जहाँ मैं जन्मा और जहाँ मेरा बचपन और युवावस्था बीती।

मैं तुरन्त ही आया। हम अपने पुराने मित्रों से मिले। नये कलाकारों से भी पहचान हुई। संगीत, नृत्य, गायन, कविता, कला हर ओर थीं। लेखक, कवि अपनी कविताएँ सुनाते-चित्रों के बीच-मैं पहली बार डागर बन्धु से मिला, उनका अद्भुत स्वर सुना। साथ ही थे स्वामीनाथन, सकसेना, प्रभाग शुक्ल, मृणाल पान्डे, अखिलेश और भी कई युवा चित्रकार जिनसे मिला, चित्र देखे। मैंने धरती को नमस्कार किया, भीम वेटका गया, हरे खेत और सुन्दर पहाड़ियों को देखकर लगा कि कितनी सम्भावनाएँ हैं देश में, हमें इसे समझना है और अपनी सारी शक्तियों से आधुनिक भारत की सांस्कृतिक को और भी आगे बढ़ाना है।

बहुत सुख से मैं गया नरसिंह पुर, ककैया, बकरिया, मंडला, दमोह। गावों में, मन्दिरों में, पहाड़ों में, जगहों में। माँ से अशोक के शब्दों में कहा-"मैं, लौटकर जब आऊँगा, क्या लाऊँगा- यात्रा के बाद की थकान।"

इस यात्रा में, नई शक्तियाँ मिलीं, नये विचार आये, भारतीय शिल्प, कला का फिर से अध्ययन किया। प्रश्न था इन्हें अपने चित्रों में किस प्रकार से ला सकूँ कि फ्रांस में बनाए चित्रों में अन्तर ज्योति अन्तर, भारतीय ही रहे। हाँ हमें बीसवीं शताब्दी में यूरोप से, संसार से, बहुत कुछ लेना है, यह स्वभाविक है। पर हमें अपनी परम्परा, अपने मूल स्रोतों को भूलना नहीं है। मैं उन्हीं केन्द्रों की ओर गया जो महत्वपूर्ण लगे, हिन्दी पुस्तकें, भगवत गीता, आचार्य विनोवा भावे, सन्त ज्ञानेश्वर, महात्मा गांधी, हिन्दी कविताएँ सब कुछ लेकर फिर लौटा।

अशोक को भी पेरिस बुलाया, फिर गोरबियों - दक्षिण फ्रांस में छोटा सा गाँव जहाँ हम हर साल तीन चार माह रहते थे। वे अविन्यो फेस्टिवल में भी विशेष रूप से आमंत्रित